पाठ 16

कौन बनेगा निंगथउ (राजा)

(यह मणिपुर की एक लोक-कथा है। इसमें पर्यावरण संरक्षण और जनता से राजा के प्रेम की भावना प्रकट की गयी है।)

बहुत, बहुत पहले की बात है। मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, राजा और रानी रहते थे। सब उन्हें बहुत प्यार करते थे।

निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, प्रजा, का बड़ा ख्याल रखते थे। 'हमारे मीयम सुखी रहें,' वे कहते। 'कांगलइपाक में शान्ति हो।' वहाँ के पशु-पक्षी भी अपने राजा-रानी को बहुत चाहते थे। निंगथउ और लेइमा हमेशा कहते: "कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं, पक्षियों, जानवरों और पेड़-पौधों को भी।"

निंगथउ और लेइमा के बच्चे नहीं थे। लोगों की एक ही प्रार्थना थी: 'हमारे निंगथउ और लेइमा का एक पुत्र हो। हमें अपना तंुगी निंगथउ मिल जाय, हमारा युवराज।'

फिर एक दिन, लेइमा ने एक पुत्र, एक मौचानीपा, को जन्म दिया। लोग बहुत खुश थे। सब अपने युवराज को देखने आये। बच्चे का सिर चूमकर उन्होंने कहा- "कितना सुन्दर बेटा है, कितना सुन्दर बेटा है।" राज्य में धूम मच गयी। लोग ढोलों की ताल पर नाच उठे, बाँसुरी पर मीठी धुनें छेड़ी।

उस वक्त उन्हें पता नहीं था कि अगले साल भी उसी तरह जश्न मनाया जायेगा। और उसके अगले साल फिर। हाँ, निंगथउ और लेइमा का एक और बेटा हुआ। फिर एक और।

अब उनके प्रिय राजा-रानी के तीन बेटे थे--- सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा।

बारह साल बाद, उनकी एक पुत्री हुई। उसका नाम सानातोम्बि रखा गया।

बड़ी प्यारी थी वह, कोमल दिल वाली। सभी उसे बहुत चाहते थे।

कई साल बीत गये। बच्चे जवान हुए। एक दिन निंगथउ ने मन्त्रियों को बुलाकर कहा- 'अब वक्त आ गया है। हमें घोषणा करनी होगी कि कौन तुम्हारा युवराज बनेगा, तुम्हारा तंुगी निंगथउ।'

'इतनी जल्दी क्यों ?' आश्चर्य से मन्त्रियों ने एक दूसरे से पूछा। पर जब उन्होंने करीब से निंगथउ को देखा, उन्हें भी लगा कि हाँ, वे सचमुच बूढ़े हो चुके थे। यह देखकर वे दुःखी हो गये।

'अब मुझे तुम्हारा युवराज चुनना ही है,' निंगथउ ने कहा।

मन्त्री हक्के-बक्के रह गये। 'पर हे निंगथउ, चुनाव की क्या जरूरत है? सानाजाउबा, आपका सबसे बड़ा पुत्र, ही तो राजा बनेगा।'

'हाँ' निंगथउ ने जवाब दिया। 'पुराने जमाने में ऐसा होता था। सबसे बड़ा बेटा ही हमेशा राजा बनता था। लेकिन अब समय बदल गया है। इसलिए हमें उसे चुनना है जो राजा बनने के लिए सबसे योग्य है।'

'चलो, राजा चुनने के लिए एक प्रतियोगिता रखते हैं,' लेइमा ने कहा।

और तब कांगलइपाक में एक मुकाबला रखा गया, एक घुड़दौड़। जो भी उस खोंगनंग तक, बरगद के पेड़ तक, सबसे पहले पहुँचेगा, युवराज उसे ही बनाया जायेगा।

लेकिन एक अजीब बात हुई। सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोम्बा--- तीनों ने दौड़ एक साथ खत्म की। कौन जीता, कौन हारा, कहना मुश्किल था।

'देखो, देखो!' लोगों में शोर मच गया। "कितने अच्छे घुड़सवार।'

मगर सवाल वहीं का वहीं रहा- तुंगी निंगथउ कौन बनेगा?

निंगथउ और लेइमा ने अपने बेटों को बुलाया। निंगथउ ने कहा-

'सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा, तुमने यह साबित कर दिया कि तुम तीनों ही अच्छे घुड़सवार हो। अब अपने-अपने तरीके से कुछ करो ताकि हम तुममें से युवराज चुन सकें।'

लड़कों ने राजा, रानी व लोगों को प्रणाम किया और अपने घोड़ों के पास चले गये। एक दूसरे को देखकर वे मुस्कराये। मगर मन-ही-मन तीनों यही सोच रहे थे कि क्या खास किया जाय।

अचानक, हाथ में बरछा लिये, सानाजाउबा अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसने चारों तरफ देखा। लोगों में सन्न्ाटा-सा छा गया। 'सानाजाउबा, सबसे बड़ा राजकुमार, अब क्या कर दिखाएगा?' उन्होंने सोचा।

सानाजाउबा ने दूर खड़े शानदार खोंगनंग पेड़ को ध्यान से देखा। उसने घोड़े को एड़ लगायी और घोड़ा झट से दौड़ पड़ा। वह तेज, और तेज, पेड़ की ओर बढ़ा।

'शाबाश! शाबाश!' सब चिल्लाये। 'थाउरो! थाउरो!' और फिर एकदम शान्त हो गये।

सानाजाउबा धड़धड़ाता हुआ खोंगनंग के पास पहुँचा। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, वह पेड़ को भेदकर घोड़े समेत उसके अन्दर से निकल गया।

'थाउरो! थाउरो!' लोगों ने फिर चिल्लाया।

अब दूसरे राजकुमार, सानायाइमा, की बारी थी। वह भला क्या करेगा?

सानायाइमा ने भी खोंगनंग को गौर से देखा। फिर उसने भी घोड़ा दौड़ाया, बहुत तेज। साँस थामे सब चुपचाप देख रहे थे। पेड़ के नजदीक आकर उसने घोड़े को कूदने के लिए एड़ लगायी। दोनों ऊपर कूदे, इतने ऊँचे, कि एक अद्भुत छलाँग में वे उस विशाल वृक्ष को पार कर दूसरी ओर पहुँच गये। देखने वाले दंग रह गये। "कमाल है! कमाल है!" वे चिल्लाये।

और अब बारी थी छोटे राजकुमार, सानातोम्बा, की। उसने भी खोंगनंग की ओर घोड़ा दौड़ाया, और पलक झपकते ही उसे जड़ से उखाड़ डाला। बड़ी शान से फिर उसने पेड़ को उठाया और निंगथउ और लेइमा के सामने जाकर रख दिया।

बाप रे, कितना हंगामा मच गया - 'थाउरो! थाउरो! शाबाश! शाबाश!' की आवाजें पास के पहाड़ांे से गूँज उठीं।

अब आप ही बताओ तुंगी निगंथउ किसे बनना चाहिए?

सानाजाउबा ?

सानायाइमा ?

सानातोम्बा ?

पेड़ को भेदकर कूदने वाला ?

पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाने वाला ?

या फिर, पेड़ को उखाड़ने वाला ?

ज्यादातर लोग सानातोम्बा को चाहते थे। क्या वह सबसे बलवान नहीं था? उसी ने तो इतने बड़े खोंगनंग को आसानी से उठा लिया था।

लोग बेचैन होने लगे। निंगथउ और लेइमा अपना फैसला सुनाने में क्यों इतनी देर लगा रहे थे? वे कर क्या रहे थे ?

निंगथउ और लेइमा सानातोम्बि को देख रहे थे। पाँच साल की उनकी बेटी उदास और अकेली खड़ी थी। वह जमीन पर पड़े खोंगनंग को देख रही थी। पेड़ के आसपास पक्षी फड़फड़ा रहे थे। घबराये हुए, वे अपने घोंसले ढूँढ़ रहे थे।

सानातोम्बि खोंगनंग के पास गयी। 'खोंगनंग मर गया,' वह धीरे से बोली, 'उसे बरछे से चोट लगी, और अब वह मर गया।'

सन्नाटा छा गया।

लेइमा ने सानातोम्बि के पास जाकर उसे बाँहों में भर लिया। फिर कहा 'निंगथउ वही है जो देखे कि राज्य में सब खुश हैं। निंगथउ वही है जो राज्य में किसी को भी नुकसान न पहुँचाये।'

सब चौकन्ने होकर सुन रहे थे।

निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा 'अगर कोई शासक बनने योग्य है, तो वह है छोटी सानातोम्बि। खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी -- सबकी तकलीफ महसूस होती है।'

'मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सँभालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोषित करता हूँ' निंगथउ ने एलान किया।

सभी ने मुड़कर उस छोटी लड़की, अपनी होने वाली रानी, को देखा। पाँच साल की बच्ची यूँ खड़ी थी जैसे खुद एक नन्हा-सा खोंगनंग हो। उसके चारों तरफ पक्षी फड़फड़ा रहे थे। कुछ उड़कर उसके कन्धों पर आ बैठे, कुछ सिर पर। उसने दानों से भरे अपने छोटे हाथ फैलाये, और धीरे-धीरे पास आकर पक्षी दाने चुगने लगे।

शब्दार्थ

एलान = सार्वजनिक घोषणा, मुनादी। **जश्न** = उत्सव, जलसा। **सिर्फ** = केवल, मात्र। **हक्के-बक्के रह जाना** = आश्चर्य में पड़ जाना। **पलक झपकना**=फौरन, तुरन्त। **सिर चूमना**=प्यार करना।।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. बरगद (खोंगनंग) के पेड़ का चित्र बनाइए और उसके कोटर में बैठी एक चिड़िया को दिखाइए।

2. बरगद (खोंगनंग) की तरह अन्य छायादार और दूध-सा पदार्थ निकलने वाले वृक्षों (जैसे-पीपल, पाकड़) में से किसी एक पेड़ को अपने आस-पास के किसी स्थान पर लगाकर उसके बड़े होने तक देखभाल कीजिए।

3. यह मणिपुर की लोककथा है। इस तरह की लोककथाएँ आपके यहाँ भी सुनी जाती रही होंगी। ऐसी ही कोइ लोककथा याद करके कक्षा में सुनाइए।

4. नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़िए तथा इस पर आधारित तीन प्रश्न बनाइए- निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा, 'अगर कोई शासक बनने योग्य है तो वह है छोटी सानातोम्बि।

खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है। सानातोम्बि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी-

सबकी तकलीफ महसूस होती है। मेरे बाद सानातोम्बि ही राज्य सम्भालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोषित करता हूँ' निंगथउ ने एलान किया।

विचार और कल्पना

1. भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधों को बहुत महत्व क्यों दिया गया है ? पता करें।

2. पेड़ों से पर्यावरण शुद्ध होता है। पर्यावरण प्रदूषित होने से जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। हम सभी का कर्तव्य है कि पर्यावरण को शुद्ध रखने में अपना योगदान दें। सोचें और लिखें कि आप पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या उपाय करेंगे ?

3. इस कहानी में निंगथउ (राजा) के चुनाव के बारे में बताया गया है। बताइए- (क) आपके यहाँ किन-किन का चुनाव किया जाता है ? (ख) चुनाव किन-किन तरीकों से किया जाता है? (ग) हमें किस प्रकार के व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए ?

4. आप क्या-क्या करेंगे कि-

- पशु-पक्षी आपसे प्यार करने लगें ?

- आपके आसपास हरियाली फैल जाए ?

लोक कथा से

1. राजा के बच्चों के नाम क्रमशः थे-

(क) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ख) सानाजाउबा, सानातोम्बि, सानायाइमा ओर सानातोम्बा।

(ग) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बि और सानातोम्बा।

(घ) सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोम्बा और सानातोम्बि।

2. जब निंगथउ और लेइमा, तुंगी निंगथउ का चुनाव कर रहे थे, उस समय सानातोम्बि की आयु थी ?

(क) चार वर्ष (ख) छह वर्ष

(ग) पाँच वर्ष (घ) बारह वर्ष

3. किस राजकुमार ने तुंगी निंगथउ बनने के लिए क्या काम किया। तीर (→) के निशान द्वारा मिलाइए-

राजकुमारों के नाम	कार्य
सानाजाउबा	पेड़ को उखाड़ना
सानायाइमा	पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाना
सानातोम्बा	पेड़ को भेदकर उसके अन्दर से निकलना

4. सानातोम्बि को अगली लेइमा घोषित किया गया, क्योंकि-

(क) वह सबसे छोटी थी।

(ख) वह दूसरों का दर्द समझती थी।

(ग) उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी सबकी तकलीफ महसूस होती थी।

(घ) उपर्युक्त 'ख' और 'ग' दोनों।

5. निंगथउ को किसने याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है-

(क) लेइमा ने (ख) सानातोम्बि ने

(ग) सानातोम्बा ने (घ) मीयम ने

6. ‘खोंगनंग में भी जान है।’ सानातोम्बि ने ऐसा क्यों कहा ?

7. कहानी की कौन सी बात आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?

भाषा की बात

1. अनुवाद एक कला है। किसी भाषा का अनुवाद करते समय इसका ध्यान रखा जाता है कि विषयवस्तु का मूल भाव सुरक्षित रहे और जिस भाषा में इसका अनुवाद किया जा रहा है, उन लोगों के लिए भी वह बोधगम्य हो।

इस पाठ में कई मणिपुरी शब्द आये हैं, जैसे- निंगथउ, लेइमा, मीयम आदि। अनुवाद करते समय लेखक ने इन शब्दों को देते हुए उनका हिन्दी पर्याय भी दे दिया है, जैसे-

(क) मणिपुर के कांगलइपाक राज्य में एक निंगथउ और एक लेइमा, (राजा और रानी) रहते थे।

(ख) निंगथउ और लेइमा अपने मीयम, प्रजा का बड़ा ख्याल रखते थे।

इसी प्रकार से आप भी तुंगी, थाउरो, खोंगनंग, शब्दों को खोजकर इनका हिन्दी अर्थ लिखिए।

2. कभी-कभी एक ही क्रिया पद से दो-दो वाक्यों के अर्थ निकलते हैं, जैसे- कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ मनुष्यों को नहीं पक्षियों, जानवरों और पेड़ों को भी।

इसी प्रकार दो वाक्यों की रचना आप भी कीजिए, जिसमें एक ही क्रियापद से दोनों वाक्यों का अर्थ स्पष्ट हो रहा हो।

3. इस कहानी में आये हुए मुहावरों को छाँटकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

इसे भी जानें

तुलसी सम्मान- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय लोककथा के विकास में उल्लेखनीय योगदान हेतु दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1983 ई0 में हुई।